17 फरवरी 2017, कुल पृष्ठ : 8, मूल्य : 2/- आर. एन. आई. 31109/77 JaipurCity / 224 / 2015-17

जैन
पथप्रदर्शक

ए-4, बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)

नैतिक एवं सामाजिक चेतना का अग्रदूत निष्पक्ष पाक्षिक

डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल के
व्याख्यान प्रतिदिन अब आधे घंटे
जिनवाणी चैनल पर
जिनवाणी JINVANI सुख, शान्ति, समृद्धि
प्रतिदिन
प्रातः 6.30 से 7.00 बजे तक

वर्ष : 39, अंक : 22 सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** आजीवन शुल्क : 251 रुपये

फरवरी (द्वितीय), 2017 (वीर नि. संवत्-2543) सह-सम्पादक : **डॉ. संजीवकुमार गोधा व पण्डित परमात्मप्रकाश भारिल्ल** वार्षिक शुल्क : 25 रुपये

पञ्चकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव संपन्न

भोपाल (म.प्र.) : यहाँ श्री कुन्दकुन्द कहान दिगम्बर जैन ट्रस्ट दीवानगंज द्वारा नवनिर्मित ज्ञानोदय तीर्थधाम में आयोजित श्री 1008 आदिनाथ दिगम्बर जिनबिम्ब पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव बुधवार, दिनाँक 1 फरवरी 2017 से सोमवार 6 फरवरी 2017 तक अनेक विशिष्ट कार्यक्रमों सहित सानन्द सम्पन्न हुआ।

महोत्सव में आध्यात्मिकसत्पुरुष श्रीकानजीस्वामी के सी.डी. प्रवचनों के अतिरिक्त अन्तरराष्ट्रीय ख्यातिप्राप्त तार्किक विद्वान **डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल** द्वारा प्रतिदिन पंचकल्याणकों का स्वरूप एवं महत्व विषय पर हुए मार्मिक प्रवचनों का लाभ मिला। आपके अतिरिक्त डॉ. उत्तमचंदजी सिवनी, पण्डित विमलदादा झांझरी उज्जैन, ब्र. सुमतप्रकाशजी खनियांधाना, पण्डित राजेन्द्रकुमारजी जबलपुर, पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली, ब्र. हेमचंदजी 'हेम' देवलाली, पण्डित शांतिकुमारजी पाटील जयपुर, डॉ. संजीवकुमारजी गोधा जयपुर इत्यादि अनेक विद्वानों के प्रवचन व सान्निध्य प्राप्त हुआ।

पञ्चकल्याणक की सम्पूर्ण प्रतिष्ठा-विधि प्रतिष्ठाचार्य ब्र. जतीशचंदजी शास्त्री दिल्ली द्वारा रजनीभाई दोशी हिम्मतनगर के निर्देशन में ब्र. श्रेणिकजी जबलपुर, मनोजजी जबलपुर, ब्र.नन्हेभैया सागर, सुकुमालजी झांझरी उज्जैन, राजकुमारजी शास्त्री उदयपुर, ऋषभजी छिन्दवाड़ा, अजितजी शास्त्री अलवर, विरागजी शास्त्री जबलपुर, सुबोधजी शास्त्री शाहगढ, सुनीलजी धवल, अनिलजी धवल भोपाल, अश्विनजी नानावटी नोगांवां, अशोकजी उज्जैन आदि अनेक महानुभावों के सहयोग से शुद्ध तेरापंथ आम्नायानुसार संपन्न हुई।

बालक ऋषभकुमार के माता-पिता बनने का सौभाग्य श्री अशोक-श्रीमती सुधा जैन (सुभाष ट्रांसपोर्ट), भोपाल को प्राप्त हुआ। महोत्सव के सौधर्म इन्द्र-इन्द्राणी श्री संजय-श्रीमती सारिका मोदी भोपाल, कुबेर इन्द्र-इन्द्राणी श्री प्रणव-श्रीमती संगीता चौधरी भोपाल एवं महायज्ञनायक-नायिका श्री देवेन्द्र-श्रीमती स्नेहलता बड़कुल भोपाल थे। यागमंडल विधान का उद्घाटन श्री नरेन्द्र-चंदना जैन भोपाल, प्रतिष्ठा मंच का उद्घाटन इंजी.विनोदकुमार-मंजू जैन सतना एवं श्री सुधीर-विभा जैन (कृषि विकास) कटनी, सिंहद्वार उद्घाटन श्रीमती बसंतीदेवी-सुरेशचंद जैन, डॉ. सीमा-डॉ. दीपक जैन परिवार इंद्रपुरी भोपाल, श्रीमती आरती जैन व श्री स्वदेश जैन परिवार विदिशा एवं प्रतिष्ठा मण्डप का उद्घाटन श्री प्रेमचंदजी प्रेमी-मंजू जैन परिवार कटनी ने किया।

महोत्सव का ध्वजारोहण श्री निहालचंद घेवरचंद परिवार जयपुर एवं डॉ. वर्षा-डॉ. निशांत जैन परिवार भोपाल के करकमलों द्वारा किया गया।

महोत्सव के विशिष्ट कार्यक्रमों के अन्तर्गत 45 फीट का कांच से बना विशाल पालना दर्शनीय रहा। दिनांक 3 फरवरी को बाल तीर्थंकर का सर्वप्रथम अभिषेक करने का सौभाग्य श्री सनतकुमार महेन्द्रकुमार चिन्मय बड़कुल परिवार विदिशा को मिला। पालना झूलन का उद्घाटन श्री सुरेन्द्रकुमार राहुल जैन कोटा एवं डॉ. अमितजी जैन उज्जैन ने किया। सर्वप्रथम आहारदान का सौभाग्य सेठ श्री गुलाबचंद सुभाषचंद अशोककुमार सुधीरकुमार आशीषकुमार शिरीषकुमार जैन 'सुभाष ट्रांसपोर्ट' परिवार भोपाल को प्राप्त हुआ।

इस महोत्सव में श्री वासुपूज्य भगवान, श्री मल्लिनाथ भगवान, श्री नेमिनाथ भगवान, श्री पार्श्वनाथ भगवान एवं श्री महावीर भगवान आदि पंच बालयति, उपरत्नों की चौबीस तीर्थंकरों की प्रतिमाएँ, पंचमेरु की अस्सी जिनालयों सहित गजदन्तों की बीस प्रतिमाएँ, भगवान शीतलनाथ की समवशरण की प्रतिमाएँ एवं मानस्तम्भ की आठ प्रतिमाएँ - इसप्रकार कुल 151 प्रतिमाओं की प्राण प्रतिष्ठा की गई। विधिनायक आदिनाथ भगवान के भेंटकर्त्ता एवं विराजमानकर्त्ता डॉ. बाबूलालजी प्रणवजी चौधरी परिवार अशोकनगर थे। संपूर्ण महोत्सव में पूजन, प्रवचन, आध्यात्मिक गोष्ठियों, बाल-कक्षाओं, भक्ति एवं सांस्कृतिक कार्यक्रमों की धूम मची रही। सांस्कृतिक कार्यक्रमों के अन्तर्गत 'इतिहास के दो सूर्य : भरत-बाहुबली' नामक नाटक आयोजित हुआ। संपूर्ण कार्यक्रम में देश-विदेश से पधारे लगभग 5-6 हजार साधर्मियों ने धर्मलाभ लिया।

महोत्सव को सफल बनाने में समिति के समस्त पदाधिकारियों के साथ अनेक नगरों के मुमुक्षु मण्डल व युवा फैडरेशन के सदस्यों का महत्त्वपूर्ण योगदान रहा। ●

पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के समस्त ऑडियो - वीडियो, प्रवचन साहित्य एवं अन्य अनेक जानकारियों के लिये अवश्य देखें-
वेबसाईट - www.vitragvani.com
संपर्क सूत्र-श्री कुन्दकुन्द कहान पारमार्थिक ट्रस्ट, मुम्बई
Ph. : 022-26130820, 26104912, E-Mail - info@vitragvani.com

सम्पादकीय –

संस्कारों का महत्व

– पण्डित रतनचन्द भारिल्ल

(गतांक से आगे...)

भारतीय संस्कृति से घृणा करने वालों ने तो इसका मजाक बनाते हुए यहाँ तक कहना प्रारम्भ कर दिया था कि ''ओ ना मा सी धम, बाप पढे ना हम'' अर्थात् 'ओम् नम: सिद्धं' जैसी भारतीय अध्यात्म विद्या न हमारे बाप-दादों ने पढी थी और न हमें पढना है।

आज का युग आर्थिक और वैज्ञानिक युग है, अत: प्रत्येक व्यक्ति अपनी संतान को अर्थकरी तकनीकी शिक्षा ही दिलाना चाहता है, यहाँ तक तो कोई बात नहीं है, उचित भी है; पर दु:ख की बात तो यह है कि उसके लिए हमें ईसाई संस्कृति की गोद में जाना पड़ रहा है, जहाँ ईसाई धर्म के संस्कार तो दिये ही जाते हैं, साथ में अंडा, मांस, मछली आदि मांसाहार को भी प्रोत्साहन दिया जाता है एवं उसे श्रेष्ठ आहार बताया जाता है। इसकारण विद्यार्थी धीरे-धीरे भारतीय एवं जैन संस्कृति से दूर होता जा रहा है।

ऐसी स्थिति में आज यह अति आवश्यक हो गया है कि हम अपने बालक-बालिकाओं को उस वातावरण में भेजने के पहले बाल मनोविज्ञान के सिद्धांत को ध्यान में रखकर सर्वप्रथम अहिंसा का पाठ पढाएँ, भगवान महावीर के मूलभूत सिद्धांतों से अवगत कराएँ तथा लौकिक शिक्षा के साथ-साथ तात्विक ज्ञान व सदाचार के संस्कार भी देते रहें।

अरे भाई ! जरा सोचो तो सही, हम मात्र वर्तमान मानव जीवन के सत्तर-पिचत्तर वर्ष सुखपूर्वक जीने के लिए जीवन का एक तिहाई भाग लगभग पच्चीस वर्ष की किशोर अवस्था तो हम विशुद्ध अर्थकरी लौकिक शिक्षा के अर्जन में ही बिता देते हैं, जिसमें केवल गुलाम बनने की गारंटी मिलती है तथा शेष जीवन का सारभूत संपूर्ण यौवन धनोपार्जन और कुटुम्ब परिवार के भरण-पोषण में बिता देते हैं, जो केवल भाग्याधीन है। यदि भाग्योदय न हो तो पूरी पढाई का सारा परिश्रम व्यर्थ ही जाता है। वह अर्थकरी विद्या भी कुछ काम नहीं आती। इसके प्रमाण में यह लोक प्रसिद्ध कहावत कहीं भी सुनी जा सकती है कि 'पढी पारसी बेचे तेल, यह देखो कर्मों का खेल'।

साठ वर्ष के बाद बुढापे का जीवन भी कोई जीवन है। उसे तो ज्ञानियों ने अर्धमृतक की संज्ञा देकर पहले ही अधमरा घोषित कर दिया है।

ऐसी स्थिति में विचारणीय यह है कि जब अपने और अपने कुटुम्ब परिवार के लौकिक जीवन को सुखी-दु:खी बनाना हमारे हाथ में है ही नहीं, जब पूर्वोपार्जित पुण्य-पाप के अनुसार ही अनुकूल/प्रतिकूल संयोग मिलता है, तो उसके लिए इतना श्रम, शक्ति व समय का अपव्यय क्यों ? और जिस आगामी अनन्तकाल के भविष्य को उज्ज्वल बनाना हमारे हाथ में है, हमारे पुरुषार्थ के आधीन है - स्वाधीन है, उस दिशा में सोचने-समझने तक का समय नहीं, यह कैसी विडम्बना है ? अत: हमें सर्वप्रथम अपने बालकों में तत्त्वज्ञान के ही संस्कार देना चाहिए।

यदि नगर में या मौहल्ले में वीतराग-विज्ञान पाठशाला न हो तो माता-पिता स्वयं ही बालक के प्रथम गुरु हैं, अत: माता-पिता आत्मा व परमात्मा के स्वरूप को जाने-पहिचाने और बालकों में भी यही संस्कार डालें।

माँ से प्राप्त संस्कारों का ही सुफल था कि आचार्य कुन्दकुन्द ग्यारह वर्ष की छोटी-सी उम्र में नग्न दिगम्बर साधु बन गये थे और समयसार, प्रवचनसार, नियमसार, अष्टपाहुड व पंचास्तिकाय जैसे महान पंचपरमागम के रूप में अध्यात्म शास्त्र हमें दे गए हैं।

धन्य हैं वे माता-पिता और धन्य हैं वे कुन्दकुन्द से बालक, जिन्होंने पालना में ही अपने पूर्वजों से तत्त्वज्ञान के संस्कार प्राप्त कर लिये थे। सभी को ऐसा सुअवसर प्राप्त हो - इसी भावना के साथ आज का प्रवचन यहीं समाप्त करते हैं।''- ऐसा कहकर आचार्यश्री ने अपना प्रेरणास्पद प्रवचन समाप्त कर दिया।

जिनवाणी स्तुति के बाद सभी श्रोता प्रसन्न मुद्रा में आज के व्याख्यान की सराहना करते हुए अपने-अपने घर चले गये। विज्ञान को भी अपने अज्ञान का अहसास हो गया। अत: वह तत्त्वज्ञान प्राप्त करने में और अधिक सक्रिय हो गया।

''कहने को तो मेडिकल साईन्स ने भी कम उन्नति नहीं की है, उसने भी अपने क्षेत्र में आसमान की ऊँचाईयों को छू लिया है।

देखो न ! हृदय, किडनी, लीवर और फेंफड़ों जैसे अत्यन्त महत्वपूर्ण अंगों का भी सफल प्रत्यारोपण कर डाला है।

पर, यह जानकर आम आदमियों को खुश होने की जरूरत नहीं है; क्योंकि ये साधन सबको सहज सुलभ नहीं हो सकते। एक-एक अंग के प्रत्यारोपण में लाखों रुपये लगते हैं। कहाँ से लायेगा हर कोई व्यक्ति इतने सारे रुपये ?

मानलो, पुण्य के योग से रुपयों का साधन बन भी जाये और अंग-अंग बदलने की भी व्यवस्था हो जाये तो भी इन अंगों का बदलना इतना आसान नहीं है, जितना कहने-सुनने में आसान लग रहा है।

यह कोई बच्चों का खेल तो है नहीं। उसमें भी तो रिस्क है। जीवन को दाव पर लगाना पड़ता है; क्योंकि अंगों के बदलने में जीवन का खतरा अंत तक बना ही रहता है।

ऑपरेशन सफल हो जाने के बाद भी वह कृत्रिम अंग कितना/कब तक काम करेगा ? करेगा भी या नहीं ? ये सारी चिन्ताओं के बादल तो छाये ही रहते हैं न ? उससे जो मानसिक क्लेश और शारीरिक कष्ट होता है, उसे कोई कैसे कम कर सकेगा ?

अरे ! जो किस्मत में होगा, उसे कौन बदल सकेगा ? होनी को कौन टाल सकता है ? मौत पर किसका वश चला है ? उसके सामने तो सबको हथियार डालने ही पड़ते हैं, एक न एक दिन हार माननी ही पड़ती है।''

इसी उधेड़बुन में उलझे अन्नू और अज्जू को अस्पताल में पड़े-पड़े महीनों हो गये थे, उपचार बराबर चल रहा था; पर अभी तक आराम होने के कोई आसार नजर नहीं आ रहे थे। वे जीवन और मौत से संघर्ष कर रहे थे। उनके अन्तर्मन का क्लेश और देह का दर्द तो वो ही जाने, पर उनकी दु:खभरी आहें और समय-समय पर निकली चीखें, आँखों से बहते आँसू और पल-पल में बदलती करवटें बता रही थीं कि उन्हें असह्य वेदना है। उनके एक-एक हावभाव से उनके कष्ट का आभास हो रहा था। उनके अत्यन्त उदास और हताश चेहरे पर उनकी जीवन के प्रति हुई निराशा स्पष्ट झलक रही थी।

एक तो विज्ञान और उनकी पत्नी विद्या को अन्नू और अज्जू के भोलेपन और निर्धनता के कारण उन पर पहले से ही सहानुभूति थी; दूसरे, संजू और राजू के चक्कर में आ जाने से उनकी जो दुर्दशा हो रही थी, उससे वे दोनों उनकी करुणा के पात्र भी बन गये थे।

अतएव विज्ञान और विद्या उनका हर तरह से सहयोग कर उन्हें सन्मार्ग पर लाना चाहते थे और दुर्व्यसनों से दूर कर उन्हें बीमारी के कष्टों से भी छुड़ाना चाहते थे।

इसकारण विज्ञान ने पूर्व में दिये गये आश्वासन के अनुसार उन दोनों का उपचार कराने के लिए और परिवार के भरण-पोषण के लिए आर्थिक सहयोग तो दे ही रखा था, उनकी सेवा-सुश्रुषा में भी अपना तन, मन, धन और जीवन अर्पण कर रखा था।

विज्ञान की इस नि:स्वार्थ सेवा और समर्पण की भावना देखकर अस्पताल के अन्य डॉक्टर भी अन्नू और अज्जू का पूरा-पूरा ध्यान रखते थे। क्षयरोग विशेषज्ञ डॉ. धर्मचन्द और उदररोग विशेषज्ञ डॉ. कनकलता जैसे नि:स्वार्थ समाजसेवी डॉक्टरों की अमूल्य सेवा भी उन्हें विज्ञान के प्रयास से उपलब्ध हो गई थी। इस कारण उनके इलाज में किसी प्रकार से कोई कमी नहीं रही थी।

पर अपने-अपने पुण्य-पाप का फल तो जीव को स्वयं ही भोगना पड़ता है। उसमें कोई किसी का हाथ नहीं बंटा सकता।

स्थिति यह बनी कि 'मर्ज बढता ही गया ज्यों-ज्यों दवा की।' अत: डॉक्टर धर्मचन्द ने विज्ञान को निजी परामर्श देते हुए कहा कि -''यद्यपि एक डॉक्टर के नाते हम लोग इनके इलाज में अन्तिम दम तक कोई कसर नहीं रखेंगे, परन्तु अब इनके लक्षणों से ऐसा नहीं लगता कि ये बहुत लम्बा जीवन जी सकेंगे। अत: मेरी निजी राय तो यही है कि अब इन्हें घर ले जाया जाये और वहाँ पर उनका इलाज चलने के साथ-साथ इन्हें अधिक से अधिक समय तक धर्म की बातें सुनाई-समझाई जावे, वैराग्यप्रेरक प्रसंग सुनाये जावें, पौराणिक कथाएँ सुनाई जावें। इन सबसे ही इन्हें शान्ति मिलेगी। यहाँ ये सब संभव नहीं हो सकेगा। इनके उपचार की व्यवस्था हम दोनों इनके घर पर ही कर लेंगे और समय-समय पर हम स्वयं भी देखभाल करते रहेंगे।

अन्नू और अज्जू भी अब तक अस्पताल के वातावरण से ऊब चुके थे, घबरा चुके थे। उनका स्वयं का दर्द तो एक ओर रहा, उनसे वहाँ रहने वाले दूसरे रोगियों का दर्द भी देखा नहीं जाता था। आये दिन हो रही मौतें, मरीजों का चीखना-चिल्लाना, उनके चित्त को आकुल-व्याकुल कर देता था। पर बेचारे मरीज भी क्या करें ? उनसे दर्द सहा नहीं जाता तो न चाहते हुए भी चीखें निकल ही पड़ती थीं। **(क्रमश:)**

शोक समाचार

(1) जयपुर (म.प्र.) निवासी श्रीमती सुशीलादेवी डंडिया धर्मपत्नी श्री मिलापचंदजी डंडिया (अध्यक्ष-जैन संस्कृति रक्षा मंच) का दिनांक 31 जनवरी को 82 वर्ष की आयु में शांतपरिणामोंपूर्वक देहावसान हो गया।

(2) भोपाल (म.प्र.) निवासी श्री मनोज जैन एडवोकेट एवं श्रीमती मोनिका जैन का दिनांक 30 दिसम्बर 2016 को सिद्धक्षेत्र सोनागिर से वापस आते समय आकस्मिक दुर्घटनापूर्वक देहावसान हो गया। आपकी स्मृति में वीतराग-विज्ञान हेतु 1100/- रुपये प्राप्त हुये।

(3) बूंदी (राज.) निवासी श्री विजयकुमारजी जैन पुत्र स्व.श्री गेंदालालजी जैन का दिनांक 28 जनवरी को शांतपरिणामोंपूर्वक देहावसान हो गया। आपकी स्मृति में जैनपथप्रदर्शक एवं वीतराग-विज्ञान हेतु 550-550/- रुपये प्राप्त हुये।

दिवंगत आत्मायें चतुर्गति के दु:खों से छूटकर शीघ्र ही अनंत अतीन्द्रिय आनंद को प्राप्त हों - यही मंगल भावना है।

स्वर्ण जयंती के मायने (19)
हम मात्र तत्त्वप्रचार के प्रति समर्पित हैं : क्यों ?

– **परमात्मप्रकाश भारिल्ल** (कार्यकारी महामंत्री–टोडरमल स्मारक ट्रस्ट)

टोडरमल स्मारक ट्रस्ट ने मात्र आध्यात्मिक तत्त्वप्रचार को अपना लक्ष्य बनाया है व हम तत्त्वप्रचार के लिये ही सम्पूर्णत: समर्पित हैं; क्योंकि हमारी यह दृढ मान्यता है कि **मात्र यही हमारे कल्याण का और शाश्वत सुख का एकमात्र मार्ग है।**

सामान्यत: जगत के सभी लोग अपनी वर्तमान की समस्याओं से ही इतने पीड़ित, त्रस्त व उनके निवारण में व्यस्त रहते हैं कि अपने अविनाशी शाश्वत कल्याण की ओर उनका ध्यान ही नहीं जाता है। व्यक्तिगत तौर पर तो सभी लोग इस रोग से पीड़ित हैं ही; पर अधिकतर सामाजिक संगठन भी सामान्यत: इन्हीं उद्देश्यों को लेकर बने हुए हैं और इसी प्रकार के क्रियाकलापों में व्यस्त हैं। और तो और आध्यात्मिक नेता और वे संत जिन्होंने अपने अविनाशी कल्याण के लिये घरबार छोड़ा है, भी दैनिक जीवन की छोटी–छोटी समस्याओं की चर्चा करते हुए और उनके निवारण के उपाय बतलाते हुए ही पाये जाते हैं, इससे प्रतीत होता है कि हम मात्र इन्हीं समस्याओं को दु:ख और इन्हीं के निवारण को सुख मानते हैं, हमें अलौकिक शाश्वत सुख की कल्पना भी नहीं है और न ही यह हमारे वर्तमान कार्यसूची में शामिल है।

हमारी स्पष्ट एवं दृढ मान्यता है कि अपनी इन वर्तमान समस्याओं का समाधान करना मात्र सर का बोझ उतारकर कंधे पर रखकर संतुष्ट होने जैसा है। यह समस्या का मूल समाधान नहीं है। हम यह मानते हैं कि यदि हमारे भवभ्रमण से मुक्ति का मार्ग प्रशस्त नहीं होता है तो वर्तमान के कुछ पल, दिन, माह या वर्ष कुछ इस तरह या उस तरह जैसे–तैसे–कैसे भी काटने हैं सो कट ही जायेंगे, क्या फर्क पड़ता है ? हमारा लक्ष्य है कि हमारा यह मानव जीवन भव के अभाव में सहायक बने, बस इसीलिये हम आत्मकल्याणकारी, शाश्वत सुखकारी आध्यात्मिक तत्त्वज्ञान के प्रचार के प्रति समर्पित एवं कृतसंकल्प हैं।

हम सभी का एकमात्र लक्ष्य है सुखी होना और **सुख–शान्ति मात्र आध्यात्मिकता से पायी जा सकती है, भौतिक वस्तुओं से नहीं;** क्योंकि कितनी भी क्यों न हो पर अंतत: जगत में भोग सामग्री सीमित ही है और हमारी तृष्णा है असीमित और फिर जगत में जो कुछ मौजूद भी है वह सब कुछ तो हमें उपलब्ध है नहीं। हमें यदि जगत की छह खण्ड की विभूति भी मिल जाये तब वह भी हमारी तृष्णा के सामने कम पड़ जायेगी, तब हम कैसे सुखी हो सकते हैं ? एक ओर छह खण्ड का अधिपति चक्रवर्ती अत्यंत व्याकुलता में जीवन व्यतीत करता है तो दूसरी ओर जिनके तन पर वस्त्र तक नहीं होते हैं ऐसे निर्ग्रन्थ दिगम्बर साधु परम सुखी होते हैं। अंतत: **सुखी होने के लिये अधिकतर चक्रवर्ती स्वयं अपनी छह खण्ड की विभूति त्यागकर यही निर्ग्रन्थ दशा धारण करते हैं।** यह अध्यात्म की शक्ति और चमत्कार है।

हमारे जीवन में यह कैसा विरोधाभास है कि हमें सुखी तो होना है; पर हम सुखस्वरूप आध्यात्मिकता को छोड़कर व्याकुलता की जनक भौतिकता के व्यामोह में उलझे हुए हैं।

लौकिक दृष्टिकोण से भी गौरवपूर्ण, सुखी और सफल जीवन जीने के लिये जीवन के अनेकों पहलुओं पर ध्यान दिया जाना आवश्यक है, इनमें **हमारे संस्कार व वृत्तियाँ सबसे महत्वपूर्ण हैं।** इसके अलावा अन्य अनेक पहलू हैं जैसे कि **समय, स्वास्थ्य, शिक्षा, परिवेश, परिजन, साधन व संसाधन, देश और समाज।** इन सबके अतिरिक्त एक और वस्तु है **आजीविका व धन–सम्पत्ति।**

यह सत्य है कि **आजीविका व धन–सम्पत्ति अत्यंत महत्वपूर्ण हैं; पर वही सबकुछ नहीं।** हमारा दुर्भाग्य कि आज हमारी नजरों में मात्र आजीविका और धन ही सबसे महत्वपूर्ण हो गया है और जीवन के अन्य पहलुओं की ओर हमारा ध्यान ही नहीं जाता है।

यदि गौर किया जाये तो हम पायेंगे कि आजीविका एवं धन की उपलब्धी हमारे जीवन का लक्ष्य नहीं उपलक्ष्य हैं; क्योंकि ये सीधे–सीधे हमारे किसी काम के नहीं हैं, ये हमें हमारे लिये आवश्यक वस्तुएं जुटाने में सहायक हैं, मात्र इसलिये आवश्यक हैं। आजीविका (रोजगार) से हमें धन की प्राप्ति होती है और धन से भोगसामग्री व साधनों की।

हमारा दुर्भाग्य कि **अनजाने ही हम सभी धन के प्रति इतने आसक्त हो गये कि इसके सामने जीवन के अन्य सभी पहलू तो गौण ही हो गये।** और तो और धन कमाने और सहेजने के फेर में हम ऐसे पड़े कि धन के माध्यम से उपलब्ध होने वाले भोग भोगने के लिये भी हमारे पास अवकाश ही नहीं रहा। धन की उपयोगिता भोगसामग्री जुटाकर कथित रूप से सुखी होने के लिये थी; पर हमारी धन जुटाने और सहेजने की प्रक्रिया ही इतनी लम्बी और कष्टप्रद बन चली है कि हमारे जीवन में तद्जनित भोग भोगने और कथित सांसारिक सुख की प्राप्ति के लिये ही अवकाश ही नहीं रहा।

हमारा यह कैसा घोर अविवेक है कि हम अपना साध्य ही भूल गये, हम मात्र साधनों की सिद्धि में ही उलझकर रह गये, मात्र साधन ही हमारे साध्य बन गये ?

मेरे उक्त कथन का आशय किसी को भोगों की ओर उन्मुख करना नहीं वरन् अपनी विवेकहीनता की ओर ध्यान आकर्षित करना है।

विषमता तो देखिये ! हमारे कथित सुख का साधन धन, धन का साधन धंधा या नौकरी, नौकरी और धंधे की योग्यता पाने का साधन शिक्षा और प्रशिक्षण और वह भी लगभग 20–25–30 वर्ष की उम्र तक; अर्थात् सक्रिय जीवन की लगभग आधी उम्र ! अर्थात् कि हम साधनों की इस लम्बी शृंखला में ही ऐसे उलझ गये हैं कि साध्य तो हमारे लिये असाध्य ही हो गया है।

यह सब कैसे हुआ ?

यह मात्र हमारी अन्धानुकरण की वृत्ति का दुष्परिणाम है। यह परिणाम है हमारे जीवन में आध्यात्मिकता के अभाव का, आध्यात्मिक चिन्तन–मनन के अभाव का।

जिस आध्यात्मिकता को भूलकर यह जगत दु:खी हो रहा है, अपने संसार का विस्तार कर रहा है, अपने जीवन में उसी आध्यात्मिकता की स्थापना के लिये हम कटिबद्ध हैं। इससे पहिले कि हम अपने आपको भोगसामग्री जुटाने और उसे भोगने जुट जाएं, उसी में व्यस्त हो जाएं, हम अपने आत्मा का व सच्चे सुख का सच्चा स्वरूप समझ सकें और अपनी जीवनचर्या, अपनी जीवनशैली इसप्रकार डिजाइन कर सकें, जिसमें स्वाध्याय और आत्मकल्याण का महत्वपूर्ण स्थान हो, इसके लिये हमने तत्त्वप्रचार को अपनी संस्था का एकमात्र लक्ष्य बनाया है।

आइये हम सभी एक नये उत्साह और जोशोखरोश के साथ इस कार्य में जुट जायें। ●

श्री कुन्दकुन्द दिगम्बर जैन स्वाध्याय मण्डल ट्रस्ट (रजि.) नागपुर द्वारा संचालित

श्री महावीर विद्या निकेतन

विशुद्ध अध्यात्म के प्रचार-प्रसार हेतु स्थापित महाराष्ट्र का अग्रणी संस्थान

कक्षा 6 वीं एवं 7वी पास प्रतिभाशाली बालकों के लिए स्वार्णिम अवसर!
साक्षात्कार शिविरः 13 से 16 अप्रैल 2017

प्रतिभा पात्रता प्रथम श्रेणी में
कक्षा 6 वीं एवं 7 वीं कक्षा पास
जैनधर्म के संस्कार
पालन में अभिरुची

- लौकिक शिक्षा के साथ-साथ धार्मिक एवं नैतिक शिक्षा
- इंग्लिश, सेमीइंग्लिश माध्यम से लौकिक शिक्षा
- अंग्रेजी, गणित, विज्ञान, कम्प्युटर आदि विषयों की कोचिंग
- व्यक्तित्व-विकास के लिए पुस्तकालय, योगा, खेलकूद, भ्रमण एवं कैम्प का आयोजन

आत्मार्थी पालक ध्यान दें।
↓
प्रवेश प्रक्रिया

कक्षा 7 वीं एवं 8 वीं में प्रवेश इच्छुक विद्यार्थी, 15 मार्च 2017 तक अंकसुची की प्रतिलिपी सहित प्रवेश फार्म कार्यालय में जमा करावें एवं 13 अप्रैल से 16 अप्रैल 2017 तक संस्था व्दारा आयोजित साक्षात्कार शिविर में पालकों के साथ अनिवार्य रुप से उपस्थित होवें।

: सम्पर्क सूत्र :

उपप्राचार्य - पं.मनीष जैन शास्त्री 8087216959, अधीक्षक - पं.भूषण जैन शास्त्री 8857868455, प्रबन्धक - पं.सुदर्शन जैन शास्त्री 9403646327
प्राचार्य - पं.विपिन जैन शास्त्री 9860140111 निर्देशक - डॉ.राकेश जैन शास्त्री 9373005801, उपसंयोजक - प्रियदर्शन जैन 9881598899
संयोजक - नरेशजी सिंघई 9373100022 मंत्री - अशोक कुमार जैन 7588740963, अध्यक्ष - जयभाई मोदी 9372375222

निवेदक : **श्री महावीर विद्या निकेतन**

नेहरु पुतला के सामने, इतवारी, नागपुर- 440002(महा.) फोन नं. 0712 .2765200, 6979257

अधिक जानकारी हेतु Log in करें - www.vidyaniketan.weebly.com

मोक्षमार्गप्रकाशक स्वाध्याय वर्ष

अध्ययनहेतु प्रश्नोत्तर

नोट :- पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट स्वर्ण जयंती महोत्सव वर्ष के अन्तर्गत मोक्षमार्गप्रकाशक स्वाध्याय वर्ष का संचालन किया जा रहा है। इस क्रम में सातवें अध्याय के प्रश्नोत्तर प्रस्तुत हैं।

प्रश्न : व्यवहाराभासी मिथ्यादृष्टि किसे कहते हैं ?

उत्तर : जो व्यवहार नय का ही सर्वथारूप श्रद्धान कर उस रूप प्रवर्तन करते हैं, वे व्यवहाराभासी मिथ्यादृष्टि हैं।

प्रश्न : व्यवहाराभासी मिथ्यादृष्टि कितने प्रकार के हैं और कौन-कौन से ?

उत्तर : व्यवहाराभासी मिथ्यादृष्टि के 4 भेद हैं -

(1) कुल अपेक्षा धर्मधारक व्यवहाराभासी मिथ्यादृष्टि

(2) परीक्षा रहित आज्ञानुसारी धर्मधारक व्यवहाराभासी मिथ्यादृष्टि

(3) सांसारिक प्रयोजनार्थ धर्मधारक व्यवहाराभासी मिथ्यादृष्टि

(4) धर्मबुद्धि से धर्मधारक व्यवहाराभासी मिथ्यादृष्टि

प्रश्न : कुल अपेक्षा धर्मधारक व्यवहाराभासी मिथ्यादृष्टि का स्वरूप बताइये।

उत्तर : जैनधर्म का स्वरूप न जानकर जो कुल में जैनधर्म की प्रवृत्ति होने से कुल क्रम से ही जैनी होते हैं, कुल प्रवृत्ति के अनुसार प्रवर्तते हैं, वे कुल अपेक्षा धर्मधारक व्यवहाराभासी मिथ्यादृष्टि जानना।

यहाँ सच्चे धर्म को भी कुलाचार जानकर प्रवर्तने वाले को धर्मात्मा इसलिये नहीं कहा; क्योंकि वह धर्म का सेवन उसके मर्म को जानकर धर्मबुद्धि से नहीं, कुलाचार जानकर लोभ/भय से करता है। यदि कल कुलाचार बदल जाये तो यह भी बदल जायेगा; अत: इसे मिथ्यादृष्टि कहा।

प्रश्न : परीक्षा रहित आज्ञानुसारी धर्मधारक व्यवहाराभासी मिथ्यादृष्टि का स्वरूप बताइये।

उत्तर : जो 'शास्त्र की आज्ञा है'- ऐसा मानकर जैनधर्म का आचरण करते हैं, परीक्षा करके सत्यासत्य का निर्णय नहीं करते, वे परीक्षा रहित आज्ञानुसारी धर्मधारक व्यवहाराभासी मिथ्यादृष्टि हैं।

इन्हें मिथ्यादृष्टि इसलिये कहा कि शास्त्र की आज्ञा मानने से धर्मात्मा होते हों तो सर्वधर्म वाले शास्त्र की आज्ञा मानते हैं, वे भी धर्मात्मा क्यों ना हों ? दूसरी बात यह है कि शास्त्र में कदाचित् कोई अज्ञान/कषाय से अपने मन की राग-द्वेषरूप बातों को लिख दे तो उनका मानना भी धर्म ठहरेगा।

प्रश्न : परीक्षा किस प्रकार करें ?

उत्तर : शास्त्रों में कितने ही कथन तो ऐसे हैं जिनकी प्रत्यक्ष-अनुमानादि द्वारा परीक्षा कर सकते हैं तथा कई कथन ऐसे हैं जो प्रत्यक्ष-अनुमानादि गोचर नहीं हैं; इसलिये आज्ञा ही से प्रमाण होते हैं। वहाँ नाना शास्त्रों में जो कथन समान हों उनकी तो परीक्षा करने का प्रयोजन ही नहीं हैं; परन्तु जो कथन परस्पर विरुद्ध हो उनमें से जो कथन प्रत्यक्ष-अनुमानादि गोचर हों उनकी तो परीक्षा करना। वहाँ जिन शास्त्रों के कथन की प्रमाणता ठहरे, उन शास्त्रों में जो प्रत्यक्ष-अनुमानगोचर नहीं है - ऐसे कथन किये हों, उनकी भी प्रमाणता करना तथा जिन शास्त्रों के कथन की प्रमाणता न ठहरे उनके सर्व ही कथन की अप्रमाणता मानना।

प्रश्न : शास्त्रों में परस्पर विरुद्ध कथन तो बहुत हैं, किन-किन की परीक्षा की जाये ?

उत्तर : मोक्षमार्ग में देव-गुरु-धर्म, जीवादि तत्त्व व बन्ध-मोक्षमार्ग प्रयोजनभूत हैं, सो इनकी परीक्षा कर लेना। जिन शास्त्रों में यह सच्चे कहे हों उनकी सर्व आज्ञा मानना, जिनमें यह अन्यथा प्ररूपित किये हों उनकी आज्ञा नहीं मानना।

प्रश्न : जिनवचन में संशय करने से तो सम्यक्त्व के शंका नामक दोष होता है।

उत्तर : 'न जाने यह किस प्रकार है'- ऐसा मानकर निर्णय न करे, वहाँ शंका नामक दोष होता है तथा यदि निर्णय करने का विचार करते ही सम्यक्त्व में दोष लगता हो तो अष्टसहस्री में आज्ञाप्रधान से परीक्षा प्रधान को उत्तम किसलिये कहा ? पृच्छना आदि स्वाध्याय के अंग कैसे कहे ? प्रमाण-नय से पदार्थों का निर्णय करने का उपदेश किसलिये दिया ? इसलिये परीक्षा करके आज्ञा मानना योग्य है।

प्रश्न : सांसारिक प्रयोजनार्थ धर्मधारक व्यवहाराभासी मिथ्यादृष्टि का स्वरूप बताइये।

उत्तर : जो कपट से आजीविका के अर्थ व बड़ाई के अर्थ व कुछ विषय -कषाय का प्रयोजन जानकर जैनी होते हैं, वे सांसारिक प्रयोजनार्थ धर्मधारक व्यवहाराभासी मिथ्यादृष्टि जानना। धर्म के आश्रय से भी यह विषय-कषाय का प्रयोजन चाहता है, सो अतितीव्र कषाय होने पर ऐसी बुद्धि आती है।

जैनधर्म का सेवन तो संसार-नाश के लिये किया जाता है, जो उसके द्वारा सांसारिक प्रयोजन साधना चाहते हैं वे बड़ा अन्याय करते हैं। इसलिये वे तो मिथ्यादृष्टि हैं ही, पापी भी हैं।

प्रश्न : धर्मबुद्धि से धर्मधारक व्यवहाराभासी मिथ्यादृष्टि का स्वरूप बताइये।

उत्तर : कितने ही जीव धर्मबुद्धि से धर्म साधते हैं; परन्तु निश्चयधर्म को नहीं जानते, इसलिये अभूतार्थरूप धर्म को साधते हैं। वहाँ व्यवहार सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चारित्र को ही मोक्षमार्ग जानकर उनका साधन करते हैं।

सम्यग्दर्शन संबंधी अन्यथा श्रद्धान -

शास्त्र में देव-गुरु-धर्म की प्रतीति करने से सम्यक्त्व होना कहा है। ऐसी आज्ञा मानकर अरहन्तदेव, निर्ग्रन्थगुरु, जैनशास्त्र के अतिरिक्त औरों को नमस्कारादि करने का त्याग किया है; परन्तु उनके गुण-अवगुण की परीक्षा नहीं करते अथवा परीक्षा भी करते हैं तो तत्त्वज्ञानपूर्वक सच्ची परीक्षा नहीं करते, बाह्यलक्षणों द्वारा परीक्षा करते हैं - ऐसी प्रतीति से

सुदेव–गुरु–शास्त्रों की भक्ति में प्रवर्तते हैं।

शास्त्र में ''तत्त्वार्थश्रद्धानं सम्यग्दर्शनं'' – ऐसा कहा है, इसलिये शास्त्रों में जैसे जीवादि तत्त्व लिखे हैं वैसे आप सीख लेता है और वहाँ उपयोग लगाता है, औरों को उपदेश देता है; परन्तु उन तत्त्वों का भाव भासित नहीं होता और यहाँ उस वस्तु के भाव ही का नाम तत्त्व कहा है। सो भाव भासित हुए बिना तत्त्वार्थश्रद्धान कैसे होगा ?

सम्यग्ज्ञान संबंधी अन्यथा श्रद्धान –

शास्त्र में सम्यग्ज्ञान के अर्थ शास्त्राभ्यास करने से सम्यग्ज्ञान होना कहा है, इसलिये यह शास्त्राभ्यास में तत्पर रहता है। वहाँ सीखना, सिखाना, याद करना, बाँचना, पढना आदि क्रियाओं में तो उपयोग को रमाता है; परन्तु उसके प्रयोजन पर दृष्टि नहीं है। इस उपदेश में मुझे कार्यकारी क्या है, सो अभिप्राय नहीं है, स्वयं शास्त्राभ्यास करके औरों को सम्बोधन देने का अभिप्राय रखता है और बहुत से जीव उपदेश मानें वहाँ सन्तुष्ट होता है।

सम्यक्चारित्र संबंधी अन्यथा श्रद्धान –

बाह्य क्रिया पर तो इनकी दृष्टि है और परिणाम सुधरने–बिगड़ने का विचार नहीं है और यदि परिणामों का भी विचार हो तो जैसे अपने परिणाम होते दिखायी दें उन्हीं पर दृष्टि रहती है; परन्तु उन परिणामों की परम्परा का विचार करने पर अभिप्राय में जो वासना है उसका विचार नहीं करते। फल लगता है सो अभिप्राय में जो वासना है उसका लगता है।

कितने ही जीव तो कुलक्रम से अथवा देखादेखी या क्रोध, मान, माया, लोभादिक से आचरण करते हैं, उनके तो धर्मबुद्धि ही नहीं है, सम्यक् चारित्र कहाँ से हो ? उन जीवों में कोई तो भोले हैं व कोई कषायी हैं, सो अज्ञानभाव व कषाय होने पर सम्यक् चारित्र नहीं होता।

कितने ही जीव ऐसा मानते हैं कि जानने में क्या है, कुछ करेंगे तो फल लगेगा – ऐसा विचारकर व्रत–तप आदि क्रिया ही के उद्यमी रहते हैं और तत्त्वज्ञान का उपाय नहीं करते। सो तत्त्वज्ञान के बिना महाव्रतादि का आचरण भी मिथ्याचारित्र ही नाम पाता है।

प्रश्न : देव–भक्ति का अन्यथारूप बताइये।

उत्तर : धर्मबुद्धि से धर्मधारक व्यवहाराभासी मिथ्यादृष्टि जीव सच्चे देव अरहंत का श्रद्धान तो करता है; परन्तु वे इन्द्रादि द्वारा पूज्य हैं, अनेक अतिशय सहित हैं, क्षुधादि दोष रहित हैं, दिव्यध्वनि समवशरण आदि विभूति से युक्त हैं.... आदि विशेषणों के आधार से उनकी महिमा/भक्ति करता है; परन्तु उनके यथार्थ गुणों को नहीं पहिचानता।

अरहंतादि को दीनदयाल, अधम–उद्धारक, सुख–दुखदाता मानकर भक्ति करता है, सो जिसप्रकार अन्यमती कर्त्ताबुद्धि से ईश्वर को कर्त्ता मानते हैं, वैसा ही यह मानता है, यह तो पाप ही का अभिप्राय हुआ।

कोई अरहंतादि की भक्ति को मुक्ति का कारण जान अतिअनुरागी होता हैं, सो जैसे अन्यमती भक्ति से मुक्ति मानता है वैसा ही हुआ।

प्रश्न : यथार्थ देव–भक्ति किसे कहें ?

उत्तर : राग का उदय आने पर भक्ति न करे तो पापानुराग हो, इसलिये अशुभराग छोड़ने के लिये ज्ञानी भक्ति में प्रवर्तते हैं और मोक्षमार्ग को बाह्य निमित्तमात्र भी जानते हैं; परन्तु यहाँ ही उपादेयपना मानकर सन्तुष्ट नहीं होते, शुद्धोपयोग के उद्यमी रहते हैं।

यही बात पंचास्तिकाय व्याख्या में कही है –

इयं भक्तिः केवलभक्तिप्रधानस्याज्ञानिनो भवति। तीव्ररागज्वर–विनोदार्थमस्थानरागनिषेधार्थं क्वचित् ज्ञानिनोऽपि भवति।।[१]

अर्थ – यह भक्ति केवल भक्ति ही है प्रधान जिसके ऐसे अज्ञानी जीव के होती है तथा तीव्र रागज्वर मिटाने के अर्थ या कुस्थान के राग का निषेध करने के अर्थ कदाचित् ज्ञानी के भी होती है।

प्रश्न : गुरुभक्ति का अन्यथा रूप किसे कहते हैं ?

उत्तर : कितने ही जीव आज्ञानुसार, ये जैन के साधु हैं, हमारे गुरु हैं, इसलिये इनकी भक्ति करनी – ऐसा विचारकर उनकी भक्ति करते हैं। कितने ही जीव परीक्षा भी करते हैं। वहाँ ये मुनि दया पालते हैं, शील पालते हैं, धनादि नहीं रखते हैं, उपवासादि तप करते हैं, क्षुधादि परीषह सहते हैं, किसी से क्रोधादि नहीं करते हैं, उपदेश देकर औरों को धर्म में लगाते हैं इत्यादि गुणों का विचारकर उनमें भक्तिभाव करते हैं; परन्तु इनके द्वारा सच्ची परीक्षा नहीं होती। सम्यग्दर्शन–ज्ञान–चारित्र की एकता रूप मोक्षमार्ग ही मुनियों का सच्चा लक्षण है, उसे नहीं पहिचानते।

प्रश्न : शास्त्र भक्ति का अन्यथा स्वरूप बताइये।

उत्तर : कितने ही जीव तो यह केवली भगवान की वाणी है, इसलिये केवली के पूज्यपने के कारण यह भी पूज्य है – ऐसा जानकर भक्ति करते हैं तथा कितने ही इसप्रकार परीक्षा करते हैं कि इन शास्त्रों में विरागता, दया, क्षमा,शील, संतोषादिक का निरूपण है इसलिये यह उत्कृष्ट है – ऐसा जानकर भक्ति करते हैं। सो ऐसा कथन तो अन्य शास्त्र वेदान्तादिक में भी पाया जाता है। इन शास्त्रों में त्रिलोकादिक का गम्भीर निरूपण है, इसलिये उत्कृष्टता जानकर भक्ति करते हैं; परन्तु यहाँ अनुमानादिक का तो प्रवेश है नहीं, इसलिये सत्य–असत्य का निर्णय करके महिमा कैसे जानें ? इसलिये इसप्रकार सच्ची परीक्षा नहीं होती। यहाँ तो अनेकान्तरूप सच्चे जीवादितत्त्वों का निरूपण है और सच्चा रत्नत्रयरूप मोक्षमार्ग दिखलाया है। उसी से जैनशास्त्रों की उत्कृष्टता है, उसे नहीं पहिचानते; क्योंकि यह पहिचान हो जाये तो मिथ्या दृष्टि रहती नहीं। **– संयोजक, पीयूष जैन, जयपुर**

१. अयं हि स्थूललक्षतया केवलभक्तिप्रधानस्याज्ञानिनो भवति। उपरितनभूमिकायामलब्धास्पदस्यास्थानराग निषेधार्थं तीव्ररागज्वरविनोदार्थं वा कदाचिज्ज्ञानिनोऽपि भवतीति। (गाथा 163 की टीका)

श्री पंचबालयति तीर्थंकर विधान संपन्न

दिल्ली : यहाँ घेवरा मोड़ स्थित अध्यात्मतीर्थ आत्मसाधना केन्द्र के श्री महावीर स्वामी दिगम्बर जिन मंदिर में दिनांक 5 फरवरी को श्री पंचबालयति तीर्थंकर विधान का आयोजन किया गया।

कार्यक्रम में अनेक स्थानों से लगभग 200 साधर्मियों ने लाभ लिया।

विधि–विधान के समस्त कार्य ब्र. अभिनन्दनकुमारजी शास्त्री खनियांधाना के निर्देशन में पण्डित राकेशजी शास्त्री, पण्डित संदीपजी शास्त्री एवं पण्डित विवेकजी शास्त्री द्वारा संपन्न कराये गये। इसके अतिरिक्त शिखर पर स्वर्ण कलशारोहण की विधि भी संपन्न हुई।

17 फरवरी 2017, मूल्य : 2/- आर. एन. आई. 31109/77 JaipurCity / 224 / 2015-17

महाविद्यालय के छात्रों का सुयश

श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धांत महाविद्यालय के विद्यार्थियों ने अनेक प्रतियोगिताओं में स्थान प्राप्त किया। महारानी कॉलेज में हुई विश्वविद्यालय स्तरीय **आशुभाषण प्रतियोगिता** में जिनेन्द्र जैन ने प्रथम स्थान एवं अर्पित जैन ने तृतीय स्थान प्राप्त किया; **हिन्दी भाषण प्रतियोगिता** में जिनेन्द्र जैन ने प्रथम स्थान एवं **अंग्रेजी भाषण प्रतियोगिता** में अरहंत जैन व मंथन गाला का सराहनीय प्रदर्शन रहा।

श्री दिगम्बर जैन आचार्य संस्कृत महाविद्यालय, सांगानेर में 26 जनवरी के अवसर पर सत्र 2015-2016 की परीक्षा में मेरिट में स्थान प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों को स्वर्णपदक देकर सम्मानित किया गया।

इस अवसर पर उपाध्याय कनिष्ठ से दुर्लभ जैन, उपाध्याय वरिष्ठ से प्रतीक जैन, अनुभव जैन, पीयूष जैन व कु.श्रुति जैन, शास्त्री प्रथम वर्ष से पारस जैन, शास्त्री द्वितीय वर्ष से अर्पित जैन एवं शास्त्री तृतीय वर्ष से अच्युतकांत जैन व कु.अनु जैन ने सम्मान प्राप्त किया।

इसके अतिरिक्त श्री दिगम्बर जैन आचार्य संस्कृत महाविद्यालय, सांगानेर में **वाद-विवाद प्रतियोगिता** के अन्तर्गत पक्ष में जिनेन्द्र जैन ने प्रथम, पीयूष जैन ने द्वितीय व सोमिल जैन ने तृतीय स्थान प्राप्त किया; विपक्ष में अर्पित जैन ने प्रथम व अनुभव जैन ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया। **कण्ठपाठ प्रतियोगिता** में अमन जैन ने तृतीय स्थान, **क्रिकेट प्रतियोगिता** में शास्त्री प्रथमवर्ष ने प्रथम स्थान एवं शास्त्री द्वितीय वर्ष ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया; मैन ऑफ द सीरीज़ अक्षय साम रहे। **खो-खो प्रतियोगिता** में शास्त्री प्रथम वर्ष ने द्वितीय स्थान एवं **वॉलीबॉल प्रतियोगिता** में शास्त्री तृतीय वर्ष ने प्रथम स्थान प्राप्त किया। **– गौरव जैन (अधीक्षक)**

डॉ. भारिल्ल के आगामी कार्यक्रम

26 से 28 फरवरी	जयपुर	वार्षिकोत्सव एवं स्वर्ण जयन्ती समापन समारोह
3 मार्च	जयपुर	विदाई समारोह
5 से 12 मार्च	रामाशाह दि.जैन मंदिर मल्हारगंज, इन्दौर	समयसार विधान
2 से 9 अप्रैल	आत्मसाधना केन्द्र दिल्ली	शिविर,कन्या निकेतन का दीक्षान्त समारोह, विज्ञान वाटिका पुरस्कार वितरण एवं उपकार दिवस
24 से 28 अप्रैल	देवलाली-नासिक	आध्यात्मिकसत्पुरुष श्रीकानजीस्वामी जयन्ती
6 से 10 मई	नागपुर	पंचकल्याणक
21 मई से 7 जून	खनियांधाना (म.प्र.)	प्रशिक्षण शिविर

बाल-युवा संस्कार शिविर संपन्न

मुम्बई : यहाँ श्री कुन्दकुन्द कहान दिगम्बर जैन मुमुक्षु मण्डल ट्रस्ट पार्ला-सांताक्रुज के अन्तर्गत विलेपार्ले में नवनिर्मित श्री सीमंधरस्वामी दिगम्बर जिनमंदिर में मुम्बई नगर की समस्त पाठशालाओं के छात्रों के लिये श्री कहान बाल-युवा संस्कार शिविर दिनांक 5 फरवरी को संपन्न हुआ।

शिविर में प्रात: सीमंधर भगवान पूजन, गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के सी.डी. प्रवचन, प्रवचन पर प्रश्नोत्तरी, जिनेन्द्र-भक्ति, निगोद से निर्वाण विषय पर कक्षा, अकलंक-निकलंक कथा आदि कार्यक्रमों का आयोजन हुआ। सभी कार्यक्रम पार्ला के साधर्मीजनों द्वारा स्थानीय कार्यकर्त्ताओं के सहयोग से संपन्न कराये गये।

इस अवसर पर झवेरी बाजार, दादर-1, दादर-2, माहिम, घाटकोपर, वाशी, मुलुंड, मलाड-1, मलाड-2 उत्कर्ष, मलाड-3 एवरशाइन नगर, बोरीवली सोनीवाडी, बोरीवली सदिच्छा, दहिसर, भायंदर, वसई-1, वसई-2 एवं पार्ला की पाठशालाओं के लगभग 600 बाल-युवाओं सहित 850 साधर्मियों ने शिविर का लाभ लिया।

अन्त में सभी पाठशालाओं के अध्यापकों व कार्यकर्त्ताओं का सम्मान पार्ला ट्रस्ट के ट्रस्टियों द्वारा किया गया।

सोनगढ में आवास की सुविधा

सोनगढ में आध्यात्मिक गतिविधियों का लाभ लेने हेतु सभी साधर्मीजनों के लिये आवास की सुविधा न्यूनतम शुल्क पर उपलब्ध है।

संपर्क सूत्र – शैलेष शाह (श्री कुन्दकुन्द कहान पारमार्थिक ट्रस्ट), 302, कृष्णकुंज, वी.एल. मेहता मार्ग, **HDFC** बैंक के ऊपर, विले पार्ला (वेस्ट), मुम्बई-56 फोन- 022-26104912, 26130820

E-mail : shailesh@vitragvani.com

प्रकाशन तिथि : 13 फरवरी 2017

प्रति,

सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** शास्त्री, न्यायतीर्थ, साहित्यरत्न, एम.ए., बी.एड.
सह-सम्पादक : **डॉ.संजीवकुमार गोधा**, एम.ए.द्वय, नेट, एम.फिल (जैनदर्शन), पीएच.डी. एवं **पण्डित परमात्मप्रकाश भारिल्ल**
प्रकाशक एवं मुद्रक : **ब्र. यशपाल जैन** द्वारा जैनपथप्रदर्शक समिति के लिए जयपुर प्रिण्टर्स प्रा.लि., जयपुर से मुद्रित तथा त्रिमूर्ति कम्प्यूटर्स, श्री टोडरमल स्मारक भवन, ए-४, बापूनगर, जयपुर से प्रकाशित।

यदि न पहुँचे तो निम्न पते पर भेजें –
ए- 4 बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)
फोन : (0141) 2705581, 2707458
E-Mail : ptstjaipur@yahoo.com